3012

वेलुतंपि

ERNAKULAM
Date

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ़
(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिळ्ळै B. Sc. (Eng.)
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

955

मोहन प्रकाशन

MOHAN PUBLICATIONS.

राष्ट्र भाषा साहित्य समिति
स्टाच्यू रोड त्रिवेन्द्रम-१

Standard XI Book No. 1

वेलुत्तंपि

(जीवनी)

BURHANUL ISLAM HIGH SCHOOL
Date 30/12
ERNAKULAM

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ़

(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)

(अध्यापक, राष्ट्र भाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A. साहित्यरत्न

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

प्रकाशक

श्री. के. प्रभाकरन नायर

काववुविला हाऊस

जगति, तिरुवनन्तपुरम १

[दाम ९० नये पैसे

[All Rights Reserved.]

VELUTHAMPI

(BIOGRAPHY)

First Impression Copies, 1500,
1957

Publisher,
K PRABHAKARAN NAIR
KAVUVILA HOUSE,
JAGATHY, TRIVANDRUM 1

Printed at
THE SRIDHARA PRINTING HOUSE,
Trivandrum—1.

Price 90 N. P.]

संपादकीय

हमारे छात्र-जगत् में उपयोगी हिन्दी पुस्तकों के नितांत अभाव ने विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रगति को अवरुद्ध किया है। उस अभाव की सर्वांगीण पूर्ति का विनम्र प्रयास है, यह पुस्तकमाला। इस में रचना की लोकप्रियता तथा अक्लिष्टता के लिए प्रचलित संस्कृत शब्दों का प्रयोग एवं केरल के छात्रमण्डल की प्रवृद्ध बौद्धिकता के अनुरूप वस्तु-व्यंजना – ये दोनों कार्य अध्याप कला में अपने विपुल अनुभव के आधार पर हमारे निष्कर्ष हैं।

प्रबंध, नाटक, जीवनी, गल्प आदि विभिन्न रूपों के द्वारा विज्ञान, धर्म्म, कला, संस्कृति—सभी क्षेत्रों का संस्पर्श करके विद्यार्थियों में महत्वाकांक्षा जाग्रत कर, एक सांस्कृतिक चेतना फैलाने का प्रयास आप इन पन्नों पर देख सकेंगे। बौद्धिक विकासक्रम में छात्रों के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर उसी के अनुरूप सभी पुस्तकों की रचना की गयी है। यहाँ तक कि कठिन शब्दों की अर्थ-सूची तथा मुहावरों का प्रयोग भी क्रम क्रम से प्रस्तुत हैं। स्तर पर स्तर ये मृदुल श्रम-सीकर सागर से चिर सुंदर बन जाएँ।

* * * * *

शीघ्रता के कारण यत्र-तत्र जो त्रुटियाँ हुई हैं उन्हें सहृदय पाठक गण क्षमा करें।

इस किताब के बारे में

झांसी की रानी के पहले ही स्वतंत्रता-संग्राम के सैकत पथ पर एक पदचिह्न अंकित हुआ। वह था वेलुत्तंपि का। उनकी जीवनी, सुधार-कार्य, स्वतंत्रता की परिरक्षा तथा महान आहुति की एक झांकी इसमें है।

के. पी. परमेश्वरन पिल्लै

परिस्थितियाँ

ईसवी सन् १७९८ का समय था। तिरुवितांकूर के महाराजा धर्मराजा स्वर्ग सिधारे। उनके शासन में इस राज्य की बडी उन्नति हुई थी। वे युद्ध-कला में निपुण थे, विद्वानों का आश्रयदाता थे, और अपनी प्रजा पर बडी कृपा रखते थे। उनके शासनकाल में मैसूर के सुलतान टिपू का आक्रमण तिरुवितांकूर पर हुआ था। टिपू के साथ यहाँ के देशी सैनिकों की मुठभेड़ हुई। युद्ध घमासान था। लेकिन अंत में टिप्पू ने अपने [1]मुँह की खायी। उस समय तिरुवितांकूर का दीवान राजा केशवदास थे। केशवदास की प्रतिभा के सामने मैसूर के व्याघ्र को भी तिरुवितांकूर का [2]लोहा मानना पडा। केशवदास ने आलप्पुषा को वाणिज्य का एक अच्छा केंद्र बनाया था। इसके सिवा राज्य में कई तरह के सुधार किये गये। [3]सौ बात की एक बात यह है कि धर्म्मराजा का शासनकाल तिरुवितांकूर के इतिहास में एक स्वर्णयुग है।

ऐसे उदार, गुणी एवं महान् राजा का देहांत १७९८ में हो गया। राज्य का उत्तराधिकारी उस समय बालरामवर्मा नामक उनका

---

[1]मुँह की खाना=लज्जित होना

[2]लोहा मानना=पराजित होना

[3]सौ बात की एक बात=सारांश

माँजा था। उन्होंने अभी अभी युवावस्था पर पदार्पण किया था। वे राज्य की जिटिल समस्याओं से अनभिज्ञ थे। राजनैतिक कार्यों में वे[1] माथा-पच्ची न कर सकते थे। राज-महल के अंदर उन दिनों कई दुर्मन्त्रणाएँ होने लगी। केशवदास उस समय भी दीवान के पद को अलंकृत कर रहे थे। लेकिन उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचे जाने लगे। ऐसी परिस्थिति में शासन की क्या दशा हो सकती है, यह आप अनुमान कर सकते हैं।

यूनान में पेरिक्लिस के बाद एथन्स का पतन हुआ। पुरातन रोम के साम्राज्य में सीसर के बाद अव्यवस्था और कुशासन की बारी आयी। इसी भाँति भारतीय इतिहास में स्कंदगुप्त के बाद गुप्तवंश का नाश तथा औरंगज़ेब के बाद मुगलों का पतन दोनों हुए थे। प्रतापी राजाओं के शासन के उपरांत राजनीति की [2]बगडोर दुर्बल शासकों के हाथों में चली जाती है। यह नियति का खेल है।

तिरुवितांकूर की राजनीति भी इसका कोई अपवाद न था। ईर्ष्या और द्वेष ने राजमहल के भीतर अड्डा जमा लिया। षड्यंत्र रचनेवाले सेवकों में जयंतन शंकरन नंपूतिरि नामक एक ब्राह्मण अग्रसर था। वह महाराज का तलवा चाटने वाला एक दुराग्रही था।

---

[1]माथा पच्ची करना=किसी काम पर अधिक सोचा विचार करना

[2]बागडोर = लगाम, घोड के मुँह में लगायी जाने वाली रस्सी

महाराज की प्रीति उसपर बरसने लगी। उसकी प्रशंसा सुन सुनकर महाराज संतुष्ट हो जाते थे।

महाराज का हस्ताक्षर पाने के लिए दीवान कई पत्र महल में भेजते थे। लेकिन उन पत्रों के लौटने में विलंब होने लगा। अवश्य कार्यों में परामर्श लेने के लिए दीवान महाराज से मिलना चाहते थे। लेकिन महाराज ने अनुमति नहीं दी। इन सब बाधाओं के पीछे जयंतन का हाथ था।

ऐसे वातावरण में एक घटना हुई। महाराज ने आज्ञापत्र दिया कि करप्पुरम नामक प्रदेश कोच्ची राज्य को वापस दिया जाय। इस आज्ञा के पीछे जयंतन की प्रबल प्रेरणा थी। आज्ञा पत्र लेकर जयंतन का एक रिश्तेदार राजधानी से रवाना हुआ। इस बीच में दीवान केशवदास को इसका पता चल गया। [1]चुटकियों में उन्होंने उस रिश्तेदार का पीछा करके उसे पकड लिया। आज्ञापत्र नष्ट किया गया। दीवान ने राजा से प्रार्थना की कि आगे ऐसी बातें न की जायें।

इन दिनों और एक मज़ेदार घटना भी राजधानी में हुई। महल में एक विशेष पालकी थी। स्वर्गीय महाराज विशेष अवसरों

---

[1]चुटकियों में = बहुत जल्दी

पर उसका उपयोग करते थे। जयंतन एक दिन उसपर चढ़कर बडे गर्व से नगर का प्रदक्षिण करने लगा। इस पर जनता क्रुद्ध हुई। जयंत की यात्रा पूरी न हुई। बीच में दीवान ने आकर, उसे पालकी से उतार दिया और दंड देने की धमकी दी। जयंत लज्जित होकर महल में चला गया।

इस के बाद मंत्रणाएँ और भी तेज़ हुई। जयंत अपना प्रभाव दिखलाना चाहता था। उसने राजा के मन में दीवान के प्रति द्वेष उत्पन्न करने का प्रयत्न ज़ारी रखा। पुराण और इतिहास से उसको कई उदाहरण सहज ही मिल जाते थे। कई सेनापतियों ने अपने राजाओं का वध करके राज्य पर अधिकार कर लिया था। मौर्यवंश के अंतिम राजा को पुष्यमित्र ने मार डाला और फिर वह गद्दी पर बैठा। दिल्ली के महलों में कई बार ऐसे नाटक खेले गये थे। हैदर अली उन्हीं दिनों मैसूर के राजा को कैद करके सिंहासन पर बैठा था। इन उदाहरणों को सुनकर महाराज का मन विचलित हो गया। वे दीवान को संदेह की दृष्टि से देखने लगे। राज्यभक्त केशवदास को इससे बडा दुख हुआ।

कुछ दिन और चले गए। जयंत से इतनी बडी अवधि सहीं न गयी। उसने भारी [1]चाल चलाने की ठानी। इसके फलस्वरूप केशवदास अपने ही घर में बंदी हो गए।

---

[1]चाल चलाना=उपाय करना

इसके कुछ ही दिन बाद लोगों ने देखा केशवदास अपने बंदी-गृह में मरे पडे हैं। लोगों का दृढ विश्वास था कि जयंत ने विष देकर उनकी हत्या कर डाली है। जनता क्रोध से उबल रही थी। वह जयंत को [1]बोटी बोटी कर देना चाहती थी। लेकिन जनरल कुमारन तंपि जैसे अफसरों ने लोगों को शांत कर दिया।

जयंत का रास्ता खुल गया। महाराज ने उसे मंत्रीत्व प्रदान किया। जयंत ने अपने सहायकों को बडे बडे स्थानों पर नियुक्त किया। वे सहायक भी जयंत के समान शासन के विषय में अनभिज्ञ थे। उतना ही नहीं, वे धन के लोभी, स्वार्थी और छल कपट में अद्वितीय थे। शासन की बागडोर ढीली पड गयी। राज्य में अराजकता फैल गयी। चोरी, डकैती और मार-काट राज्य के कोने कोने में होने लगीं। इनका दमन करने के लिए कुछ न किया गया। जयंत अपने में ही एक आग था। उसको उत्तेजित करने केलिए हवा की तरह सहायक भी थे। आग की लपटें ऊँची उठीं। राज्य उस ज्वाला में [2]झुलस गया।

इस समय राज्य पर व्यय का भारी बोझ आ पडा था। टिपू के आक्रमण के समय अंग्रेज़ कंपनी ने तिरुवितांकूर की सहायता की

---

[1]बोटी बोटी करना=शरीर को टुकडे टुकडे कर देना

[2]झुलसना=गरमी के कारण सूख जाना

थी। उसके बदले अंग्रेज़ों को एक बडी रकम देनी पडती थी। इसी तरह राज्य के भीतर भी धनियों के पास से सरकार ने कर्ज़ लिया था। यह सब चुकाने में केशवदास भी अपने को असमर्थ पाते थे। खजाना खाली था। इस पर नया दीवान बहुत क्रुद्ध हो गया। वह धन-संचय करने के मार्ग ढूँढने लगा।

नये रास्ते जयंत के सामने खुल गये। उसने केशवदास और उनके बंधुओं की सारी [1]जायजाद [2]नीलाम करके धन-संचय किया। नमक, तंबाकू आदि दैनिक जीवन के उपयोगी साधनों की [3]मालगुज़ारी बढ़ायी गयी। इसके अलावा राज्य के धनियों, नेताओं और अफ़सरों के नाम पर एक एक रकम लिख दी। जयंत ने घोषणा की ये रकमें खजाने में बिना विलंब अदा करनी चाहिए। यह बडा ही घोर अत्याचार था। कई अभिमानी व्यक्तियों ने इसका विरोध किया। उनको कडे दंड दिये गये। किसी किसी को कडी धूप में भारी पत्थर ढोकर खडा होना पडता था। कई निरपराध लोगों ने कोडे की मार खायी। राज्य पर पंचायतें थीं। उनके नेताओं से असभ्य व्यवहार किया गया। जिसने जयंत का साथ दिया वह बिरुदों से सम्मानित किया गया। जिसने जयंत का मार्ग रोका उसको अपमान,

---

[1]जायदाद = संपत्ति

[2]नीलाम = अधिक दाम बोलनेवाले को बेचने का ढंग

[3]मालगुज़ारी = Tax.

दण्ड और कारागृह को भोगना पडता था। शासन पद पद पर दूषित होता गया।

जनता भय से काँप उठी। आश्रय के लिए वह चारों ओर देखने लगी। इस अंधकार में कौन रास्ता दिखावे? इस अंधेर नगरी में कौन क्रांति का झण्डा ऊँचा उठावे? इन उठती हुई अत्याचार की लहरों को कौन अपनी छाती से रोक ले?

सहसा इसका उत्तर अंतरिक्ष में गूँज उठा। दक्षिण तिरुवितांकूर में क्रांति की टाप सुनाई दी। तलवारें बज उठीं। क्रुद्ध जनता का पारावार उमड पडा। उसके आगे आगे थे महान नेता वेलुत्तंपि।

प्रश्न

१. धर्म्मराजा के शासन काल को स्वर्णयुग क्यों कहता है?

२. उनके बाद तिरुवितांकूर की क्या दशा थी? उसका कारण क्या था?

३. जयंत के कुशासन में जनता को क्या क्या कष्ट झेलने पडे?

उदय

केरल का दक्षिण भाग कई सपूतों को जन्म देकर धन्य हो गया है। राजा केशवदास, अय्यप्पन मार्ताण्ड पिल्लै जैसे उन्नत व्यक्ति इसी भू-भाग में पैदा हुए थे। कन्याकुमारिका जैसे सुंदर तीर्थस्थान भी यहीं है। इसी प्रदेश में महाराज मार्ताण्डवर्म्मा के पूर्विक राजा लोग राज करते थे। मार्ताण्डवर्मा ने अपने भुजबल से उत्तर के कई राज्यों पर अधिकार लिया और तिरुवितांकूर राज्य स्थापित किया। दक्षिण के इस प्रदेश में * कई लडाइयाँ लड चुकी हैं। यहीं इरविक्कुट्टि पिल्लै ने अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र रखने के लिए जान दे दी थी। यहाँ कई बार युद्ध के बाजे बज उठे हैं, तलवारें बिजली की तरह चमक उठी हैं और तप्त रक्त की नदियाँ बह निकली हैं। इस प्रदेश का इतिहास वीरों की रामकहानियों से उज्वल है। ऐसे प्रदेश में वेलुत्तंपि का भी जन्म हुआ।

पुराने समय में इस प्रदेश की राजधानी पद्मनाभपुरम थी। वहाँ राजमहल था, किले कंगूरे थे और राज्य की सेना रहती थी।

---

*इस दक्षिणी भाग को वेणाड कहते थे। मार्ताण्डवर्मा के पूर्विक, केवल वेणाड पर शासन करते थे। मथुरा से 'तिरुमलै नायक्कन' नायक राजा ने अपने मंत्री रामप्पय्यन के नेतृत्व में सेना भेजकर वेणाड पर आक्रमण किया था। उस समय यहां के मंत्री इरविकुट्टि पिल्लै ने रणांकण में अपनी जान देकर वेणाड की स्वतंत्रता की रक्षा की।

पीछे तिरुवनन्तपुरम राजधानी बन गयी। फिर भी देशीय सेना अधिकतर पद्मनाभपुरम गढ़ के अन्दर रहती थी। यह सेना दिलोनाय* के प्रगल्भ शिक्षण में बडी समर्थ और शक्तिशाली बन चुकी थी।

पद्मनाभपुरम से पश्चिम की ओर तलक्कुलम नामक छोटा गाँव रहता है। इसके आसपास प्रभुओं के कई भवन थे। ये प्रभुजन युद्धों के अवसर पर राजा की बडी सहायता करते थे। इस लिए उनको "तंपि" जैसे बिरुद दिये जाते थे। उनके घरों में युवकों को अभ्यास कराने के अखाडे होते थे। गाँव में होनेवाले झगडों में ये ही कुडुंब पंच का काम भी करते थे।

तलक्कुलम गाँव का स्पर्श करती हुई "वल्लियार" नामक छोटी नदी बहती है। उसके पास खेतों के किनारे वेलुत्तंपि का भवन खडा था। पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में एक एक मकान खडा करके उन दिनों के प्रत्येक भवन का निर्माण होता था। ऐसे चार

---

* मार्तांण्डवर्मा के शासनकाल में डच सेना से तिरुवितांकूर सेना का युद्ध हुआ था। कोलाचल के बंदरगाह में लडाई हुई। उस में डच सेना की पराजय हुई और दो डच सेनापति पकडे गये। उन में एक था दिलोनाय। उन्होंने आगे चलकर मार्तांण्डवर्मा की सेवा की।

भवनों से वेलुत्तंपि का घर बना था। उसकी दीवारों के काठ में तरह तरह के चित्र अंकित किये गये थे। शिल्प-कला का एक अमूल्य उदाहरण था वह भवन। भवन के दक्षिण में एक मंदिर था। मंदिर की प्रतिष्ठा महाकाली की मूर्ति थी।

ऐसे भवन में ई० सन् १७६५ के चैत महीने में वेलुत्तंपि का जन्म हुआ था। उसके माता-पिताओं ने पास के "कुमारकोविल" नामक मंदिर में बार बार पुत्र लाभ के लिए प्रार्थना की थी। "कुमारकोविल" में भगवान सुब्रह्मण्य की प्रतिष्ठा है। इसलिए उन्हीं के स्मरण में पुत्र का नाम भी माता-पिताओं ने वेलायुध रखा। उसका संकुचित रूप है वेलु।

वेलुत्तंपि के बचपन में ही उनके माता-पिताओं का देहांत हो गया। तंपि ने कुंचादिचपिल्लै नामक गुरु से शिक्षा प्राप्त की। ये गुरु संस्कृत, तमिल और मलयालम भाषाओं के और ज्योतिष एवं वैद्यशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे। वे अपने शिष्य की प्रतिभा पर संतुष्ट हो गये। कुछ ही वर्षों में उन्होंने तंपि को इन विद्याओं में निपुण बना दिया। मलयालम में अपने विचारों को उद्दिष्ट शक्ति और ओज के साथ वेलुत्तंपि प्रकट कर सकते थे। बाद को अंग्रेज़ों से युद्ध करते समय कुडण्रा से उन्होंने जो घोषणा की थी उसके वाक्यों से यह बात हम समझ सकते हैं। इसी भाँति

तमिल और संस्कृत में भी उनका ज्ञान गहरा था। गणित में उनके सामने दीवान केशवदास का आदर्श था। केशवदास की गणित में आश्चर्यकारी क्षमता थी। राज्य के आय-व्यय का हिसाब लगाने में, [1]बहियों के [2]हेर-फेर ढूँढ निकालने में, लगान कर्ज़ आदि की संख्यायें याद रखने में वे सिद्धहस्त थे। उन्हीं को आदर्श मानकर तंपि गणित शास्त्र में अग्रसर हो गए।

उन दिनों भाषा की पण्डिताई से बढ़कर शारीरिक अभ्यास और क्षमता पर अधिक ध्यान दिया जाता था। घरों में अकसर अखाडे होते थे और युवकों का दैनिक परिशीलन हुआ करता था। वेलुत्तंपि इस विद्या में भी दूसरों को पराजित करते थे। उनका शरीर हट्टा-कट्टा और सुडौल था। वे ऊँचे कद के थे। चौडे कंधे, विशाल नयन, लंबे हाथ और तना हुआ [3]सीना—सब मिलकर उनके लौह विग्रह को शोभा दे रहे थे।

वेलुत्तंपि ने अपनी योग्यताओं को शांति के स्थापन में लगा दिया। उनके गाँव के आसपास चोरी और डकैती हुआ करती थीं।

---

[1] बही=हिसाब लिखने की पुस्तक

[2] हेर-फेर=उलट-पलट; घुमाव-फिराव

[3] सीना = छाती

तंपि ने इनका दमन किया। उनका [1]हुलिया देखकर चोरों का [2]छक्का छूट जाता था। डाकू उनके दर्शनमात्र से अपने अपराधों को स्वीकार करते थे। तंपि के अश्रान्त यत्न से कई बडी बडी चोरियों की [3]कलई खुल गयी। धीरे धीरे वे वहाँ के ताल्लुकेदार का बडा सहायक बन गए। पंचों का सर्वमान्य मुखिया भी वे थे। उनका यश चारों ओर पुष्पों की सुगंधि की तरह फैल गया।

ऐसे समय में एक बार महाराज धर्म्मराजा पद्मनाभपुरम पहुँचे। वे रामेश्वरम की तीर्थयात्रा करके लौट रहे थे। उनके साथ दीवान था और सेना भी थी। कई अमूल्य हीरे और जवाहिर उन दिनों महल से गायब हो गये। चोर का पता भी न चला। दीवान ने चोर को पकडने के लिए दिन दूनी रात चौगुनी कोशिश की। लेकिन चोरी की कलई न खुली। महाराज असंतुष्ट हो रहे थे। उस समय उन्होंने वेलुत्तंपि के बारे में सुना। तंपि को महल में बुलाकर उन्होंने चोरी की बात कह दी। तंपि ने अखाडे के अभ्यासियों के सहारे तीन दिनों के अंदर चोरों को पकड लिया और

---

[1] हुलिया=सूरत, आकर

[2] छक्का छूटना=धैर्य नष्ट होना

[3] कलई खुलना = रहस्य खुलना

महाराज के सामने प्रस्तुत कर दिया। संतुष्ट होकर महाराजा ने वेलुत्तंपि को ताल्लुकेदार बना दिया।

अब सोने में सुगंधि भी आगयी। तंपि अपने में न्यायनिष्ठ थे। न्याय करना ही उनके जीवन का उद्देश्य था। अब उनको शासन का अधिकार भी मिल गया। वे अपने कर्तव्य के पालन में बडी दिलचस्पी से लग गये। उनके ताल्लुके में चोरी का नामो-निशान तक न था। शांति सब कहीं विराजने लगी। लोग आराम से जीने लगे। यात्री भय के बिना विचरण करने लगे।

उन दिनों ज़माना बादल रहा था। राजधानी में राजनीति का वातावरण विषैला हो रहा था। दीवान केशवदास का दुर्मरण हुआ। जयंत अपनी दुर्मंत्रणाओं के फलस्वरूप दीवान की कुरसी पर बैठ गया। जनता पर अत्याचार होने लगे। शासन अव्यव-स्थित हो गया। जयंत अपने गीध की-सी दृष्टि से राज्य के धनियों को ढूँढ रहा था। उसकी दृष्टि दक्षिण में ताल्लुकेदार वेलुत्तंपि के ऊपर भी पड गयी। उसने आज्ञा भेज दी कि वेलुत्तंपि तुरंत मेरे सामने हाज़िर हो जाएँ

वेलुत्तंपि को आज्ञापत्र मिल गया और वे राजधानी की तरफ़ रवाना हुए।

प्रश्न

१. दक्षिणी केरल की विशेषताएँ क्या हैं ? वहाँ पुराने समय में पद्मनाभपुरम की क्या प्रधानता थी ?

२. उन दिनों की शिक्षा-दीक्षा का ढंग कैसे होता था ? किस आचार्य ने वेलुत्तंपि को शिक्षा दी ?

३. वेलुत्तंपि कैसे ताल्लुकेदार बने ?

४. वाक्यों में प्रयोग करो :—

छक्का छूटना, पता चलना, कलई खुलना, हिसाब लगाना।

उत्कर्ष

अठारहीं सदी में बहुत सी पंचायतें थीं। गावों का शासन अकसर पंचायतों द्वारा ही होता था। अंग्रेज़ों के आगमन के पहले ही यहाँ प्रजातंत्र शासन का बीज बोया जा चुका था। प्रत्येक ताल्लुक को कई विभागों और उपविभागों में बाँट दिया गया था। प्रत्येक उपविभाग में जनता के प्रतिनिधियों का एक संघ होता था। उस प्रदेश के सामाजिक, धार्मिक, अर्थिक एवं कृष्य प्रश्नों पर यह संघ चर्चा करता था। संघ के निर्णय सर्वमान्य थे। देश का राजा भी संघ के अधिकार में हस्तक्षेप न करता था। इन संघों के प्रतिनिधि मिलकर प्रत्येक विभाग का शासन करते थे। इस तरह गाँवों का शासन गणतंत्र के नियमों पर चलता था। कभी कभी लगान भारी हो जाता था या कानून कड़े हो जाते थे। ऐसे अवसरों पर संघों के प्रतिनिधि राजधानी जाकर राजा के सामने निवेदन करते थे। राजा उनकी प्रार्थना सुनने के लिए बाध्य था।

पीछे अंग्रेज़ों द्वारा इन पंचायतों का नाश हो गया। एक बार अंग्रेज़ कंपनी के एजन्ट ने संघ के * प्रतिनिधियों को कैद कर लिया।

---

* अंग्रेज़ एजन्ट मेजर बानरमान जब पद्मनाभपुरं में वास कर रहा था तब संघ के प्रतिनिधि उससे मिलने गए। बानरमान ने सोचा कि जनता उसपर आक्रमण करने आ रहा है। उस ने

उसने संघों के सारे अधिकार समाप्त कर दिये और ग्राम-सभाओं का ध्वंस कर दिया। पंचायतों ने दम तोड दिया।

दक्षिण के ताल्लुकों में भी इस तरह की कई पंचायतें थीं। वे सब जयंत के कुशासन से क्रुद्ध हो रही थीं। लेकिन किसीने विद्रोह का नेतृत्व नहीं लिया। क्रांति के सारे लक्षण अंतरीक्ष में थे। सिर्फ एक योग्य नेता की कमी थी।

दीवान के सामने वेलुत्तंपि आज्ञानुसार हाज़िर हुए। जयंत ने कहा कि खजाना खाली हो गया है, इसलिए तीन हज़ार रुपये तुम अभी दे दो; नहीं तो तुम नौकरी से निकाल दिये जाओगे। यह न्यायहीन माँग सुनकर तंपि [1]आग बबूला हो गए। उन्होंने इसकी प्रतीक्षा न की थी। लेकिन अपने क्रोध को उन्होंने तुरंत ही संभाल लिया। उन्होंने कहा कि रुपये जमाने केलिए तीन दिन की अवधि चाहिए। जयंत ने [2]हामी भरी। लेकिन उन तीन दिनों तक उसने तंपि को ताल्लुकेदार के अधिकारों से वंचित कर दिया। चोट खाये हुए सर्प की तरह तंपि बाहर चले आये।

प्रतिनिधियों को कैद कर लिया और संघ का गला घोंटने का निश्चय किया।

[1] आग बबूला होना = क्रुद्ध हो जाना

[2] हामी भरना = सहमत होना

उसी रात को घोडे पर तीस मील की यात्रा करके वे अपने भवन पर आ गए। उनको भोजन और निद्रा की धुन नहीं थी। वे पंचायतों के नेताओं से मिले। राज्य में होनेवाले अत्याचार के समाचार अदनी शक्तिशाली शैली में उन्होंने सब को समझा दिया। उन्होंने व्यक्त कर दिया कि एक भारी आन्दोलन से इस कुशासन का अंत करना चाहिए। पंचायतों ने हामी भरी। जनता के नेता प्रभावित हो गए। उन्होंने पूर्ण सहकारिता का वादा किया। अभिलाषाएँ जग गयीं। नेतृत्व के स्थान पर वेलुत्तंपि को देखकर लोगों का उत्साह उमड़ पडा।

उन दिनों राज्य के पश्चिमी जिले का कार्यकर्ता अय्यप्पन चम्पकरामन नामक एक व्यक्ति था। वे तंपि का बडा मित्र थे और जयंत के कुशासन से असंतृप्त थे। उन्होंने इस आंदोलन में तंपि का सहयोग देने का वादा किया। उन्होंने चिरयिनकील आदि ताल्लुकों से जनता के प्रतिनिधियों को लेकर तिरुवनन्तपुरम में पहुँच जाने का निश्चय किया।

विप्लव की वार्त्ता दीवान के पास न पहुँची। सेना के जनरल और दूसरे कार्यकर्त्ताओं ने भी अनसुनी कर दी। वेलुत्तंपि के और अय्यप्पन चंपकरामन के प्रति उनके मन में बडा आदर था। लेकिन इस बीच अंग्रेज़ कंपनी के प्रतिनिधि को समाचार मिल गया। उसने राज-

महल में वार्त्ता पहुँचा दी। आन्दोलन का दमन करने की आज्ञाएँ महल से दी गई। लेकिन उन आज्ञाओं का पालन नहीं हुआ।

दक्षिण की सभी पंचायतों के प्रतिनिधि वेलुत्तंपि के भवन में सम्मिलित हुए। उनको संबोधित करके वेलुत्तंपि ने एक प्रभावशाली भाषण दिया। उन्होंने देश की आसन्न आपत्तियों का वर्णन किया। क्रांति की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उनकी वक्तृता ने जनता को उत्साहित कर दिया। वहाँ से वे सब एक जत्था बनकर निकल पडे। तरह तरह के [1] नारे लगाए गये। रास्ते में आम जनता ने उनको आशीर्वाद दिया। रास्ते की पंचायतों के प्रतिनिधि भी उनसे मिलते गए। तिरुवनन्तपुरम पहुँचते पहुँचते वह जनता का एक विशाल पारावार-सा बन गया।

सन् १७९९ का जेठ महीना था। पाँचवीं तारीख की रात को जनता का यह महासागर तिरुवनन्तपुरम में किले के चारों ओर लहरें मारने लगा। चिरयिनकील से अय्यप्पन चंपकरामन के नेतृत्व में एक दूसरा जन-समूह भी आ चुका था। किले के बाहर सबने डेरा डाल दिया।

---

[1] नारा लगाना = किसी विशेष सिद्धांत या पक्ष का घोष करना

समाचार सुनकर महाराज भय से त्रस्त हो गये। उनको आन्दोलन का कारण भी ज्ञात नहीं था। सहायता के लिए जयंत भी पास न था। वह अपने घर में चूहे की भाँति छिपा हुआ था। उसके सहायक भी छिप गये। आखिर जनता की आवश्यकताएँ जानने के लिए महाराज ने दूतों को भेजा।

जनता की माँग साफ थी। जयंत को दीवान के पद से भ्रष्ट करके देश से निकाल देना चाहिए। उसके सहायकों के कान काटकर उन्हें कोडे की सज़ा देनी चाहिए। नमक और तमाखू का लगान कम कर देना चाहिए।

महाराज के सामने कोई चारा नहीं था। उन्होंने जनता के हितानुसार कार्य करने का निश्चय किया। जयंत और उसके सहायक जनता के [1]हवाले कर दिये गये। जनता के विशेष प्रतिनिधियों की पंच बैठी। पंच के निर्णय के अनुसार जयंत का सिर मुडाकर उसे देश से निकाल दिया। उसके सहायकों के कान काट दिये। उन्हें कोडे लगाए गये। फिर उनको कैद में रखा। इस राज्य के [2]दुर्दैव का अंत हुआ।

---

[1] हवाले करना = अधीनता में दे देना

[2] दुर्दैव = दुर्भाग्य

विप्लव के नेताओं ने फिर महाराज के दर्शन किये। महाराज ने अय्यप्पन चंपकरामन को दीवान के पद पर नियुक्त किया और वेलुत्तंपि को वाणिज्य मंत्री बना दिया।

x x x x

महल में कुंचुनीलन पिल्लै नामक एक कर्मचारी था। राजा का बडा सेवक होने के कारण राजनैतिक क्षेत्र में उसका काफी प्रभाव फैला था। महाराज का तलवा सहलाने में वह बडा होशियार था। जयंत का वह मित्र था और इस कारण जयंत के पतन में उसका [1]मन भी मसोस रहा था। सेना के जनरल कुमारन तंपि और विप्लव के नेता वेलुत्तंपि से वह मन ही मन जल रहा था। कुमारन तंपि का भानजा दक्षिणी जिले का कार्यकर्ता था। वह भी कुंचुनीलन पिल्लै के रास्ते का काँटा था। कुमारन तंपि और उनके भानजे के अंग्रेज अफसरों के बीच कई मित्र थे। उन में [2]यदा कदा पत्र व्यवहार भी होता था। कुंचुनीलन पिल्लै ने इस वास्तव का अनुचित लाभ उठाया। उसने महाराज का [3]कान भरा कि अंग्रेजों से रहस्य में सलाह करके ये दोनों अफसर सिंहासन पर अधिकार जमाने का प्रयत्न कर रहे हैं। महाराज यह सुनकर घबरा गए।

---

[1] मन मसोसना = मन ही मन दुख करना

[2] यदा कदा = कभी कभी

[3] कान भरना = किसी के विरुद्ध कोई बात मन में बिठा देना

बार बार यत्न करने के फलस्वरूप आखिर कुंचुनीलन पिल्लै का [1] अरमान पूरा हुआ। महाराज ने कुमारन तंपि और उनके भानजे का वध करने की आज्ञा दे दी। ये दोनों स्वर्गीय दीवान केशवदास के बंधु थे और जनता की आँखों के तारे थे। इस कारण कुंचुनीलन पिल्लै ने रहस्य में आज्ञा का पालन करने की ठानी। शहर से कुछ दूर समुद्र के किनारे एक भयानक प्रदेश में दोनों अफसरों को ले जाकर उसने राजाज्ञा का पालन किया।

इस निठुर वध के कुछ समय पूर्व ही दीवान अय्यप्पन चंपकरामन की मृत्यु हो गयी थी। अब शासन की बागडोर थामने के लिए कोई न रहा। भरण अब भी अव्यवस्थित था। खजाना खाली था। राजा के सामने कई आर्थिक समस्याएँ थीं। संक्षेप में दीवान के पद पर एक कर्तव्यनिष्ठ, न्यायी सुदृढ व्यक्ति की आवश्यकता थी। महाराज की दृष्टि सहज ही वेलुत्तंपि पर गयी।

इस काल में वेलुत्तंपि वाणिज्य मंत्री के कर्तव्यों का पालन बडी क्षमता से कर रहे थे। आय-व्यय का ठीक ठीक हिसाब लगाने और बही रखने की प्रथा उन्होंने शुरू कर दी। सभी विभागों में दुर्व्ययों का अंत कर दिया। रिश्वत लेनेवाले कर्मचारी पदच्युत कर दिये गये। वाणिज्य के क्षेत्र में नया रक्त बहने लगा।

---

[1] अरमान = इच्छा

कालीमिर्च, इलायची आदि देश में उत्पन्न होनेवाली वस्तुओं का [1] बाज़ार गरम हुआ।

इस समय दीवान का पद अलंकृत करने केलिए वेलुत्तंपि ही सबसे योग्य व्यक्ति थे। सब लोग न्याय और शांति की स्थापना के लिए उन्हीं की ओर ताक रहे थे। शांति चाहनेवालों का तंपि आश्रय-दाता थे, राजा का वे राजभक्त और राज्यभक्त आश्रित थे, डाकू लुटेरों का वे दिली दुश्मन थे और थे ब्राह्मणों और पंडितों का विनीत सेवक।

महाराज ने वेलुत्तंपि को दीवान के पद पर प्रतिष्ठित किया। जनता आनन्द से पुलकित हो गयी।

प्रश्न

१. अठारहवीं सदी के पहले तिरुवितांकूर में गाँवों का शासन कैसे होता था? उस शासन का अंत कब और कैसे हुआ?

२. वेलुत्तंपि ने क्यों एक क्रांति का संघटन किया? उसका फल क्या हुआ? उसमें वे कैसे सफल हुए?

३. कुंचुनीलन पिल्लै कौन था? उसने राजधानी में कौनसा षड्यंत्र किया?

---

[1] बाज़ार गरम होना = किसी वस्तु की अधिकता होना

वेलुत्तंपि का शासन

वेलुत्तंपि का न्यायविधान मनुस्मृति के आधार पर था। मनुस्मृति में ब्राह्मणों का बहुत ऊँचा स्थान दियागया है। ब्राह्मणों पर अपराध करनेवालों को कडे से कडे दण्ड देनेका विधान था। वेलुत्तंपि अपने दण्डों की उग्रता के लिए प्रसिद्ध थे। जनता में उनका बडा आतंक छा गया था। मालगुज़ारी न, देनेवाले व्यक्तियों को झुकाकर उनकी पीठ पर भारी पत्थर लाद देना भूखे छोडना, इमली खिलाना, कडी धूप पर खडा करना आदि तो साधारण दंड थे। रिश्वत लेनेवाले कर्मचारियों को कोडे लगाना, पदच्युत करना आदि भी साधारण थे। रिश्वत की प्रथा तो उस समय सरकारी कर्मचारियों का बहुत बडा कलंक था। राज्य में परिष्कारों को [1] अमल में लाने के पहले रिश्वत की प्रथा का नाश करना ज़रूरी था। इसलिए वेलुत्तंपि राज्य भर [2] दौरा करने लगे। उनके साथ मनुस्मृति का पंडित एक ब्राह्मण भी था।

कई दिनों ताल्लुकेदार और वाणिज्य मंत्री रहने के कारण कर्मचारियों का मनोविज्ञान वेलुत्तंपि को सुविदित था। जनता की शिकायतें सुनने में वे हमेशा उत्सुक थे। अपराधी कभी उनके हाथ

---

[1] अमल में लाना = कार्यान्वित करना

[2] दौरा करना = यात्रा करना

से न निकल जाता था। चाहे हत्या भी हो, चार-पांच दिनों में [1] जामिल उनके सामने हाज़िर किया जाता था। कभी कभी गाँवों में वृक्षों की छाया में दीवान का न्यायालय बैठता था। सब कहीं शासन-रूपी यंत्र का [2] ज़ंग निकाल देने में तंपि दत्त-चित्त थे।

एक बार इडवा नामक स्थल पर कुछ मुसलमानों ने मिलकर राह-चलते एक ब्राह्मण को पकड़कर उसकी संपत्ति लूट ली। ब्राह्मण ने तिरुवनन्तपुरम में पहुँचकर दीवान से शिकायत की। तुरंत हीं वेलुत्तंपि कुछ सैनिकों को लेकर इडवा पहुँच गये। उन्होंने आज्ञा दी कि लुटी हुई संपत्ति तुरंत उनके सामने हाज़िर की जाय। लेकिन किसी ने अपराध को स्वीकार नहीं किया। तब दीवान ने वहाँ के कुछ लठैत मुसलमानों को पकड लिया। मनुस्मृति के अनुसार ब्रह्मण की संपत्ति लूटनेवाले को वृक्ष से लगाकर उसकी छाती पर [3] कील घुसेड देना चाहिए। एक एक करके मुसलमानों को पेडों से लगा-कर उनकी छाती पर किसी दया के बिना [3] कील लगाये गये। जब दो तीन व्यक्ति इस कठोर दण्ड के शिकार बने तब लुटी हुई वस्तुएँ दीवान के सामने आ ही गयीं।

---

[1] जामिल = अत्याचारी

[2] ज़ंग = Rust

[3] कील = Nail

इसी भाँति राजधानी से पन्द्रह मील दूर एक स्थान पर डाकुओं ने कुछ ब्राह्मणों को मार पीटकर उनका धन लूट लिया। तंपि को इस पर बडा रोष हुआ। डाकू पकडे गये। मनुस्मृति के अनुसार उनके हाथ पैर काटे गये।

एक बार दीवान अपने जन्मस्थान तलक्कुलम में कार्यालयों की जाँच कर रहे थे। उस समय पास के एक हाट में एक चोरी हुई। दीवान के सैनिकों ने हाट का घेरा किया। दीवान ने आज्ञा दी कि कोई अपने स्थान से हटने न पावे। सब लोग ज्यों के त्यों खडे रहे। दीवान ने भीड़ में एक [1] सरसरी दृष्टि डाली। अगले क्षण में चोर को उन्होंने पकड लिया। उपस्थित जनता के सामने उसे कडा दण्ड दिया गया।

इस तरह देश में शांति की स्थापना की गयी। यात्री लोग सडक पर अपना धन भूल से छोडकर जावें तो भी उनके लौटते समय धन वहीं पर दीख पडता था। दूसरों की संपत्ति पर किसीकी दृष्टि न गयी। सुशासन का शकट तेज़ी से चलने लगा। न्याय-विधान में वेलुत्तंपि के समान राज्य में कोई दीवान सिद्धहस्त नहीं था।

राज्य के कर्मचारियों के कर्तव्य निश्चित नहीं थे। दीवान ने उनके कर्तव्यों और अधिकारों की सीमाएँ निश्चित कर दीं। अपने

---

[1] सरसरी = जल्दी में; मोटे तौर पर

और दूसरे अफसरों का वेतन भी उन्होंने निश्चित किया। आलप्पुषा वाणिज्य का एक बडा केंद्र था। वहाँ की सुविधाएँ बढ़ाकर कई सुधार करके उसे एक अच्छा शहर बना लिया। चंगनाशेरी, आलंकाड आदि स्थानों पर दीवान ने बाज़ारों की स्थापना की। राज्य की प्रधान सडकों को चौडी कर दी और यात्रा की सुविधाएँ बढ़ा दीं। आज का बालरामपुरम शहर उन दिनों लुटेरों का एक केंद्र था। वहाँ का जंगल काट-छाँटकर सडकें बना कर रहने की सुविधाएँ बढ़ा दीं।

धीरे धीरे खजाना भरने लगा। सरकार के ऋण चुकाये जाने लगे। यहाँ ईस्ट इण्डिया कंपनि का एजन्ट उस समय कर्नल मेकाले नामक अंग्रेज़ था। उसने दीवान की खूब प्रशंसा कर के गवर्नर जनरल को रपट भेज दिया। बिलायत में कंपनी के डयरक्टर ने भी वेलुत्तंपि को एक समर्थ और सराहनीय व्यक्ति कहा है।

कुंचुनीलन पिल्लै इस बीच में अपनी ईर्ष्या से कुढ़ कुढ़ कर मर रहा था। दीवान ने रिश्वत लेना मनाया था। इसलिए कुंचुनीलन पिल्लै की [1]आमदनी भी कम हो गयी थी। वह दीवान के न्याय-विचार की कठोरता का वर्णन राजा के सामने करता था। उसने कहा कि दीवान और अंग्रेज़ एजन्ट के बीच बडी मित्रता है।

---

[1] आमदनी = आय

इसलिए भविष्य में राजा के विरुद्ध उनके खडे होने की संभावना है। राजा का मन विचलित हो गया। दीवान अधिक समय दौरे पर थे। इसलिए कुंचुनीलन पिल्लै की दुर्मंत्रणा पर महाराज को विश्वास करना पडता था।

आखिर एक दिन महाराज ने एक आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। आज्ञा थी कि दीवान को कैद करके फाँसी का दण्ड दिया जाय। बेलुत्तंपि उस समय आलप्पुषा में थे। समाचार पाकर वे अवाक् रह गये। तुरंत ही उन्होंने कर्नल मेकाले को खबर दी। दोनों साथ साथ तिरुवनन्तपुरम पहुँच गये। महाराज को उन्होंने परिस्थितियाँ साफ साफ बता दीं। आज्ञापत्र फाड डाला गया। लेकिन कुंचुनीलन पिल्लै और उसके सहायक बच नहीं सके। कइयों को फाँसी दी गयी और कइयों को जेल में डाल दिया गया। सिर्फ कुंचुनीलन पिल्लै कहीं अप्रत्यक्ष हो गया।

इसके बाद और एक दुर्घटना हुई। राज्य की सुरक्षा के लिए अंग्रेज़ों की एक सेना यहाँ पडाव डालकर पडी थी। उसके खर्च के लिए चार लाख रुपया प्रतिवर्ष कंपनि को देना पडता था। यह खजाने पर एक बडा भारी बोझ था। दीवान ने देशी सेना के वेतन में कुछ कमी करने का निश्चय किया। वह समाचार सेना में फैल गया। वह क्षुब्ध हो गयी। उनमें कई लोग दीवान से ईर्ष्या

करते थे। कुछ तो उनके कठोर न्यायविचार से अतृप्त थे। सेना का नियंत्रण करने के लिए सिद्धहस्त जनरल कुमारन तंपि अब न थे। सेना में असंतोष फैल गया। देशी सैनिक क्रुद्ध हो कर राजधानी पहुँच गये और वहाँ लूट-पाटकर अपनी अतृप्ति प्रकट करने लगे वे दीवान की हत्या करना चाहते थे।

इस उचित अवसर पर कर्नल मेकाले ने सहायता का वचन दिया। वह देशी सेना का नाश करना चाहता था। दीवान ने अंग्रेज़ सेना की सहायता से विद्रोह का गला घोंट दिया। देशी सैनिकों को जनता का सहयोग न मिला था और वे अव्यवस्थित थे। इसलिए विद्रोह दब गया। उसके नेताओं को गोली से उडा दिया गया।

लेकिन अंग्रेज़ों ने इसका अनुचित लाभ उठाया। वे इस राज्य पर अपना अधिकार फैलाने की [1] ताक में थे। गवर्नर जनरल उस समय वेलेस्ली था। उसके मतानुसार एक नयी संधि करना इस समय आवश्यक था। यहाँ की अंग्रेज़ सेना को हमेशा के लिए यहाँ रखना उनके लिये ज़रूरी था। इसलिये सेना के विद्रोह को कारण बनाकर किसी न किसी प्रकार वेलेस्ली एक नया सुलह बनाना चाहता था। इसके अनुसार कर्नल मेकाले महाराज पर एक

---

[1] ताक = प्रतीक्षा

नयी संधि करने केलिए जोर डालने लगा। उसने धमकी भी दी कि संधि न की जाय तो राज्य की सीमा में रहनेवाली एक अंग्रेज़ सेना राज्य पर आक्रमण कर देगी। महाराज विवश थे। संधि पर हस्ताक्षर करने से अंग्रेज़ों का अधिकार मानना पडता था। वेलुत्तंपि ने खूब माथा पच्ची की। इस दबाव से बचने का कोई [1]चारा न मिला। अयोध्या, कर्नाटक, तंजाऊर, मैसूर आदि देशों के नरेशों का अनुभव उन्हें मालूम था। अंग्रेज़ सेना का आक्रमण इस समय वे नहीं चाहते थे। आखिर विवश होकर उनको भी मेकाले की रायं माननी पडी। इस तरह सन् १८०५ में अंग्रेज़ कंपनी से सुलह किया गया।

इस संधि के अनुसार विदेशी शत्रुओं से देश की सुरक्षा का भार अंग्रेज़ों ने ले लिया था। बदले में अंग्रेज़ों को यहाँ से आठ लाख रुपये प्रतिवर्ष देने का निश्चय भी हुआ। रुपया न दिया जाय तो देश पर अधिकार जमाने का हक भी कंपनी को था।

यह संधि तिरुवितांकूर के लिए अपमान की बात थी। महाराज की स्वतंत्रता सीमित हुई। अंग्रेज़ों के सिवा किसी और योरोपीय को यहाँ नौकरी नहीं दे सकते थे। बाहर के राजाओं के

---

[1] चारा = उपाय

साथ पत्र व्यवहार करना भी मना था। फिर भी महाराज को संधि पत्र पर हस्ताक्षर करना ही पडा।

प्रश्न

१. उदाहरण देकर साबित कीजिए कि वेल्लुत्तंपि का न्याय-विधान कठोर था या नहीं।

२. सैनिकों में विप्लव क्यों हुआ और उसका नतीजा क्या हुआ?

३. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—

अमल में लाना, गला घोंटना, दौरा करना, बाज़ार गरम होना।

अंग्रेज़ों की शत्रुता

सन् १८०५ जनवरी १२ वीं तारीख को अंचुतेंग में जो दरबार हुआ उस में महाराज ने संधि पर हस्ताक्षर किया। संधि की शर्तें सुनकर आम जनता असंतुष्ट हो गयी। उसको यह भारी प्रवंचना-सी लगी। लोगों ने विश्वास किया कि वेलुत्तंपि ने महाराज को बहकाकर आपत्ति के इस गर्त्त में गिराया है। महाराज का भी दिल बैठ गया।

वेलुत्तंपि विश्वास करते थे कि कंपनी-सरकार आठ लाख रुपये से दो लाख की कमी कर देंगी। संधि के पहले मेकाले ने भी इस संबंध में दीवान को सांत्वना दी थी। लेकिन जब संधि बनायी गयी तब अंग्रेज़ों का रंग भी बदल गया। दीवान ने शिकायत की कि राज-भण्डार शुष्क है। मेकाले ने देशी सेना का विघटन करने का उपदेश दिया। कई वर्षों से वह इसीकी ताक में रहता था। देशी सेना का नाश हो जाने पर राज्य बिलकुल दुर्बल पड जायेगा। महाराज इसके अनुकूल न थे। वे दीवान से असंतुष्ट हो गये। कर्मचारियों को इसका पता लग गया। वे दीवान की आज्ञाएँ मानने में विलंब करने लगे। रज्य का आय घट जाने लगा। राजकाज में दीवान को अब पहले की तरह उत्साह न रहा। लेकिन अंग्रेज़ एजन्ट रुपये के लिए हठ करता रहा। उस रकम में कुछ कमी करने केलिए वह

तैयार न था। दीवान ने अब तक मौन धारण किया था। मेकाले ने उनका उपकार किया था। उस बात को ध्यान में रखकर वे अब तक चुप रहे थे। लेकिन मेकाले की ज़िद बढ़ती गयी। वह किसी प्रकार न मानता था। दीवान से भी अब रहा न गया। उन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की। मेकाले ने गुस्से में आकर कहा कि वह दीवान को पदच्युत कर देगा। इसका अधिकार मेकाले को नहीं था। फिर भी मेकाले अपने अंध गर्व में सब कुछ भूला हुआ था।

एक दिन दीवान कुछ रुपये जमा करके मेकाले से मिलने गए। लेकिन मेकाले ने इस रकम का स्वीकार नहीं किया। उसने साफ़ कह दिया कि पूरे आठ लाख रुपये देने पर ही वह स्वीकार करेगा। दीवान यह सुनकर आपे से बाहर हो गए। उन्होंने कहा कि आठ लाख रुपया तो रहे, एक फूटी कौडी भी अब इस राज्य से अंग्रेज़ों को नहीं मिलेगी। मेकाले ने भी धमकी दी कि वह दीवान को देशनिकाला करके जेल में डाल देगा। इस भाँति उनकी मुलाकात खतम हुई।

महाराज ने गवर्नर जनरल को लिखा कि किसी तरह मेकाले को वापस बुला लेना चाहिए। अंग्रेज़ों का एजन्ट और कोई व्यक्ति होता तो कोई झगडा न होता। परंतु कंपनी सरकार ने मेकाले को

वापस नहीं बुला लिया। इसके बदले मेकाले ने महाराज को उपदेश दिया कि तुरंत ही वेलुत्तंपि को पदच्युत करना चाहिए। लेकिन महाराज को मालूम था कि ऐसी विकट परिस्थिति में वेलुत्तंपि जैसे दृढ व्यक्ति की सेवा आवश्यक है।

इस समय कोच्ची राज्य में भी अंग्रेज़ों का एजन्ट मेकाले ही था। उसके और कोच्ची के दीवान के बीच एक झगडा खडा हुआ। दीवान का एक विरोधी व्यक्ति उसके पंजे से बचकर मेकाले की शरण में आया था। दीवान ने उस व्यक्ति को छोड़ देने की प्रार्थना की। मेकाले ने नहीं माना। तब दीवान ने मेकाले और उसके शरणागत व्यक्ति दोनों का वध करने का निश्चय किया। उसने वेलुत्तंपि को समाचार दिया। तंपि [1] फूले अंग न समाए। दोनों अपने अपने राज्य में सेना का संगठन करने लगे। कोच्ची में उस समय कुछ डच सैनिक रहते थे। उन्होंने दीवान की सहायता करने का वचन दिया। उनके द्वारा वेलुत्तंपि ने सहायता के लिए नेपोलियन को एक पत्र भेजा। सन् १८०९ के जनवरी महीने में नेपोलियन के यहाँ आने का भरोसा था।

इस बीच में मेकाले ने तंपि को एक प्रलोभन दिया था। उसने वादा किया कि अगर वेलुत्तंपि पदत्याग करके मलबार जाकर बस

---

[1] फूले अंग न समाना = बहुत प्रसन्न होना

जायेंगे तो उन्हें पाँच सौ रुपया मासिक पेंशन देने की व्यवस्था कर देगा। लेकिन तंपि पर इस प्रलोभन का कोई असर न पडा।

दोनों राज्यों के दीवान अंग्रेज़ों से लडने के लिए तैयार हो गये। तब तंपि ने मेकाले के पास दूत भेजा। उन्होंने कह भेज कि पेंशन पाकर मलबार में रहने के लिए वे तैयार हैं, लेकिन मलबार तक पहुँचना तो चाहिए, मार्ग में उनकी शरीर-रक्षा के लिए मेकाले कुछ सैनिकों को भेज दें। मेकाले ने अपने अंगरक्षकों को तंपि के पास भेज दिया। उस समय मेकाले कोची में रहता था। जब उसके अंगरक्षक चले गए तब कोची के दीवान ने पूर्वनिश्चय के अनुसार मेकाले पर आक्रमण किया। कई अंग्रेज़ सैनिक मारे गए। मेकाले भय से काँप उठा। लेकिन उसका [1] नसीब अच्छा था। वह किसी तरह अपने बंगले से बचकर बन्दरगाह में पहुँच गया। बंदरगाह में अंग्रेज़ों के दो एक जहाज़ पडे थे। मेकाले जहाज़ तक पहुँच गया और दीवान के पंजे से बच गया।

---

[1] नसीब = भाग्य

प्रश्न

१. सन् १८०५ की संधि के कारण तिरुवितांकूर की क्या हानी हुई ?

२. महाराज वेलुत्तंपि पर क्यों असंन्तुष्ट हो गए ?

३. मेकाले और तंपि में शत्रुता कैसे उत्पन्न हुई और बढ़ती गयी ?

४. मेकाले का वध करने के लिए कौन-सी चाल चलायी गयी और उसका फल क्या हुआ ?

लडाई छिड़ गयी

आखिर लडाई छिड गयी। जो होनी थी वह होकर ही रही। वेलुत्तंपि की तैयारी पूरी हुई थी। उन्होंने जगह जगह घूम कर सैनिकों को एकत्र करके संगठन किया था। कोलम में सबसे पहले युद्ध का श्री गणेश हुआ। वहाँ अंग्रेज़ सेना लडने लगी। तीन चार दिन घमासान युद्ध हुआ। देशी सेना बडी बहादुरी से लडी। वेलुत्तंपि का उग्र विग्रह देशी सेना में स्फूर्ति भर देता था। तोपें आग बरसती थीं। तलवार से तलवार भिड गयी। भाले छूट पटे। दोनों ओर के सैनिकों के सिर धरती पर लोटने लगे। रक्त की नदियाँ बह चलीं।

देशी सेना के कप्तान कुछ नालायक व्यक्ति थे। कई योग्य व्यक्ति पहले सैनिक विप्लव में मारे जा चुके थे। इसलिए देशी सेना का ठीक ठीक संचालन न हो सका। इस बीच में दक्षिण की पहाडी घाटियों से होकर एक अंग्रेज़ सेना राज्य में घुस रही थी। इस समाचार ने देशी सेना के छक्के छुडा दिये। वह [1] तितर बितर हो गयी।

इतना होने पर भी वेलुत्तंपि निराश न हुए। उन्होंने कुण्डरा नामक स्थान से एक घोषणा की। यह घोषणा इतिहास में अमर है।

---

[1] तितर-बितर होना = छिन्न-भिन्न होना

उस में अंग्रेज़ों की प्रवंचना का नग्न चित्र खींचा हुआ था। उसमें मैसूर और कर्नाटक का अनुभव वर्णित था। उसकी सशक्त आलंकारिक भाषा ने जनता के सुप्त हृदयों में प्रतिहिंसा का भाव जगा दिया। कुण्डरा की घोषणा देश के अभिमान का उद्गार था।

लोग झुण्ड के झुण्ड सेना में भर्ती होने लगे। युद्ध छिड गया। लेकिन इस महान समर का गला घोंटनेवाली कुछ घटनाएँ हुईं। कोच्ची पर कर्नल कूपेज के नेतृत्व में एक अंग्रेज़ सेना ने आक्रमण किया। कोच्ची के दीवान ने अंग्रेज़ों का लोहा मान लिया। वहाँ का आन्दोलन ठंडा हो गया।

अंग्रेज़ों ने कुण्डरा की घोषणा के विरुद्ध एक घोषणा की। वह जनता को बहकाने के लिए पर्याप्त थी। देश की नयी सेना सुसंगठित नहीं थी। उसके सैनिक अभ्यस्त नहीं थे। इसलिए उनका संचालन करना कठिन था। दूसरी और तीसरी बार कोल्लम की अंग्रेज़ सेना पर तंपि ने आक्रमण किया। लेकिन उनको हार खानी पडी।

दक्षिण में कर्नल सेन्ट लीगर के नेतृत्व में एक अंग्रेज़ सेना पहाडी रास्ते से होकर राज्य में घुसने की कोशिश कर रही थी। लेकिन पहाड के ऊपर मज़बूत किला था। देशी सैनिक होशियार

थे। इसलिए अंग्रेज़ सेना के एक विभाग ने पहले दक्षिण के दूसरे एक किले पर आधी रात को आक्रमण कर दिया। किले पर अधिकार करके वे सैनिक राज्य में घुस गये। इस समय सेन्ट लीगर की सेना ने पूरब से भी आक्रमण शुरू कर दिया। आगे और पीछे से प्रधान किले पर आक्रमण हुआ। घनघोर लडाई हुई। देशी सैनिक आखिरी दम तक बहादुरी से लडे। एक एक सैनिक ने अपनी जान देकर किले की रक्षा करने का प्रयत्न किया। लेकिन भाग्य अंग्रेज़ों के पक्ष में था। किला उनके हाथों लगा।

किले पर अधिकार करके अंग्रेज़ सेना राज्य में घुस आयी। विजय के गर्व से अंध होकर उसने बेचारे ग्रामीणों को लूट लिया। पद्मनाभपुरं गढ़ का भी पतन हुआ। बरसाती नदी की भाँति उमड़ घुमड़कर अंग्रेज़ सेना तिरुवनन्तपुरम पहुँच गयी।

वेलुत्तंपि इस बीच में राजधानी में पहुँच गये। उन्होंने महाराज के दर्शन किये। महाराज दुखी थे। तंपि ने सांत्वना के साथ उपदेश दिया कि अंग्रेज़ों के आते समय महाराज सारा अपराध तंपि के माथे मढा दें। इससे सिंहासन बच जायगा।

इस आखिरी मुलाकात के बाद वेलुत्तंपि तिरुवनन्तपुरम से अप्रत्यक्ष हो गए। कर्नल सेन्ट लीगर की सेना झंडा फहराती हुई

राजधानी में प्रविष्ट हुई। महाराज ने सारा दोष तंपि पर मढा दिया। अंग्रेज़ों के साथ संधि हुई। कर्नल चामेर्स ने भी अपनी सेना लेकर तिरुवनन्तपुरम पहुँच गया।

अंग्रेज़ों का उपदेश सुनकर महाराज ने घोषणा की कि वेलुत्तंपि को पकड देनेवाले व्यक्ति को पचास हज़ार रुपये का इनाम दिया जायगा। वेलुत्तंपि को पकडने के लिए सैन्य भी नियुक्त हुआ। अंग्रेज़ों के उपदेश से महाराज ने उम्मिणि तंपि नामक व्यक्ति को दीवान पद पर रखा। उम्मिणि तंपि अंग्रेज़ों का बडा आदर करता था। उसने भूतपूर्व दीवान को पकडने के लिए कडी आज्ञाएँ दीं। वेलुत्तंपि की संपत्ति ज़ब्त की गयी। हाथियों को भेजकर उनके भवन का ध्वंस किया गया। उनके बन्धुओं और सहायकों को उम्मिणि तंपि ने जेल में डाल दिया।

फिर भी वेलुत्तंपि का पता न चला।

प्रश्न

१. कोल्लम की लड़ाई में देशी सेना के पराजित होने के कारण क्या थे?

२. कुण्डरा की घोषणा क्या थी? उसका क्या प्रभाव हुआ?

३. दक्षिण के पहाडी किले पर अंग्रेज़ सेना ने कैसे विजय पायी?

वीर गति

वेलुत्तंपि रातों रात राजधानी से चले गये थे। दिन में मित्रों के भवनों में छिपे रहते और रात को फिर यात्रा करते जाते थे। उनके साथ उनका छोटा भाई पत्मनाभन तंपि भी था। महाराज की घोषणा के बारे में वे जान चुके थे।

इस यात्रा के बीच वे एक बार चिरयिनकील में भी आ गए। वहाँ उनके मित्र पश्चिम विभाग के कार्यकर्त्ता अय्यप्पन चंपकरामन का भवन था। वहाँ भी एक रात उन्होंने बिता दी। इसी प्रकार किलिमानूर के राजमहल में भी वे कुछ समय ठहरे थे। वहाँ तंपि ने अपनी लंबी तलवार छोड दी थी।

इस प्रकार चलते चलते वे मण्णडी नामक गाँव में पहुँच गये। तब उम्मिणि तंपि के सैनिकों को उनका पता चल गया। उन्होंने तंपि का पीछा किया। तंपि और उनके भाई ने मण्णडी के मन्दिर में शरण ली। मंदिर में घुसकर उन्होंने किवाड़ बंद किया। सैनिकों ने मंदिर का घेरा किया। वे किवाड़ तोडने का प्रयत्न करने लगे। वेलुत्तंपि को मालूम था कि शत्रुओं के हाथों पड़ जाने पर उनका बडा अपमान होगा। इसलिए उन्होंने अपनी हत्या करने के लिए भाई से अनुरोध किया। पद्मनाभन तंपि अपने सगे भाई का वध न कर सका। इस समय किवाड तोडा जा रहा था। आखिर कोई उपाय नदेखकर वेलुत्तंपि ने अपनी कटार ले ली और जोर से उसे अपनी छाती में घुसेड़ दिया।

सैनिकों ने किवाड तोड डाला। उन्होंने देखा कि वेलुत्तंपि का रक्त में रंगा हुआ शरीर ज़मीन पर निश्चेष्ट पडा है। पास पद्मनाभन तंपि अवाक् खडा था।

तंपि की मृतदेह पाकर अंग्रेज़ और खासकर कर्नल मेकाले निराश हो गए। उन्होंने उस शव को फाँसी में लटका दिया! यह पाशविक और बीभत्स कर्म करके अंग्रेज़ों ने अपना विद्वेष प्रकट किया। पद्मानभन तंपि को भी फाँसी की सज़ा दी गयी। तब जाकर कर्नल मेकाले ने चैन की साँस ली।

इस तरह एक महान्, उग्रव्रती, न्यायनिष्ठ, आदर्शवान व्यक्ति का अंत हुआ। भारत में अंग्रेज़ शासन के विरुद्ध सबसे पहले उन्होंने जनता के आन्दोलन को रूप दिया था। देश की स्वतंत्रता के बलि वेदी पर उन्होंने जान दे दी। उनका उज्वल चरित्र आज भी जन-हृदयों में स्फूर्ति भर देता है।

प्रश्न

१. वेलुत्तंपि के साथ अंतिम समय में कौन था? उनको छिपकर क्यों चलना पड़ता था?

२. वेलुत्तंपि ने क्यों आत्महत्या की?

३. अंग्रेज़ों ने अपनी प्रतिहिंसा का नीच भाव कैसे प्रकट किया?

कुण्डरा की घोषणा

[वेलुत्तंपि ने कुण्डरा नामक स्थान से केरलीय सन् ९८४ पौष की पहली तारीख को जो घोषणा की थी उसकी सूचना पहले दे चुका हूँ। यह राजनैतिक दृष्टि से हीं नहीं, बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी एक महान प्रमाण है। स्पष्ट और सुन्दर शैली में वेलुत्तंपि ने अंग्रेज़ कंपनी के हथकंडों का जीता जागता चित्रण इसमें किया है। नीचे इस घोषणा का सरल अनुवाद दिया जाता है।]

"यह आज निर्णित हो चुका है कि इस समय पर्याप्त यत्न किये बिना तिरुवितांकूर राज्य का अस्तित्व सुरक्षित न रहेगा। अतः यहाँ के महान व्यक्ति, महाब्राह्मण, सरकारी नौकर तथा शूद्र तक की निम्न जाति के लोग अवगत करने के लिए यह घोषणा की जाती है।

"परशुराम से स्थापित यह केरल और यह राज्य अनादिकाल से लेकर चेरमान पेरुमाल के राज्यपालन के समय तक और उसके बाद हज़ारों वर्षों के हमारे राजवंश के शासनकाल तक अनुचित हस्तक्षेप करने के अपराधी नहीं हुए हैं। सन् ९३३ में जिन महाराज का देहांत हुआ उन्होंने दूरदर्शिता के साथ समझ लिया कि भविष्य में आमदनी की कमी होगी और राज्यशासन का भारी उत्तरदायित्व

आनेवाली पीढी झेल नहीं सकेगी। इसलिए उन्होंने जल और पुष्प के साथ यह राज्य श्रीपद्मनाभ देव के चरणों में समर्पण कर दिया।

"आगे शासन करनेवाले नरपति श्रीपद्मनाभ के प्रतिनिधि बनकर राजकाज करते आये। यह भी निश्चित किया गया कि भोग-विलास की अपेक्षा तप एवं व्रत की निष्ठा पर अधिक ध्यान दिया जाय और स्वयं दुख झेलकर भी जनता को सुखी रखने के लिए राजा लोग ईश्वर-सेवा, मुरजप, भद्रदीप, अन्नसत्र आदि सत्कर्म करके दिन बितावें। जनता आज सुख और समृद्धि में दिन काट रही है। इस कारण यह सर्वविदित हो चुका है कि इस कलियुग में हिमाचल से कन्याकुमारिका तक दूसरा कोई भी धर्म्मनिष्ठ राज्य नहीं होता है।

"मुहम्मद आलीखाँ आर्काट जीतकर तृचिनाप्पल्लि और दक्षिणी प्रदेशों का अधीश जब बन गया और मित्र-भाव से प्रतिवर्ष हमसे छः हज़ार रुपये तथा एक हाथी लेने लगा था तब से लेकर यह राज्य किसी भी अनुचित उपद्रवों में भागी नहीं हुआ है। इस परिस्थिति में सुलतान टिपू और अंग्रेज़ कंपनी प्रबल बन गए। यह विश्वास किया गया कि इनमें अंग्रेज़ कंपनी अधिक सत्यव्रती और विश्वास के योग्य होती है और वह धोखा नहीं देगी। इस कारण पहले ही अंचुतेंग में किला बनाने का स्थल देकर कंपनी को यहाँ अधिष्ठित

किया। आशा थी कि हमारा प्रभाव उनपर सदैव रहेगा। उस आशा के [1] बूते पर हम सुलतान टिपू से शत्रुता करने लगे।

"फिर तो अनुभव से यह सिद्ध हुआ कि इनकी मित्रता नाश का, और इनपर किया गया विश्वास दोष का निदान बन गया। यह प्रसिद्ध हो गया कि सारे विश्व में इनके समान द्रोह तथा विश्वासाघात से भरी जाति कभी न उत्पन्न हुई है और आगे कभी न उत्पन्न होगी। उसका कारण यह है कि इनके रक्षक और सहायक नवाब को प्रवंचना से दिन दिन दुर्बल बनाकर, वंश का नाश करके, फिर निकटस्थ राज्यों के प्रदीप्त ऐश्वर्य-दीपों को बुझाकर वे इस राज्य में भी प्रविष्ट हुए, और पहले उपाय से, शनैः शनैः बल के प्रयोग से, सर्वनाश करने के प्रयत्न में संलग्न हो गये हैं।

"इसका एक विवरण संक्षेप में यहाँ किया जायगा। सुलतान टिपू के साथ युद्ध करते समय इनकी सहायता लेने के फलस्वरूप इन्होंने हमारी विषम परिस्थिति में हमसे दस लाख वराह हड़प लिया। उसके पश्चात् सन् ९६८ में हम यह संधि करने के लिए विवश हो गए कि प्रतिवर्ष हम इनको छः लाख रुपये देते रहेंगे और आगे सदैव उसी संख्या से वे संतृप्त रहेंगे, एक पाई भी ज़्यादा नहीं माँगेंगे, और न राजकाज में हस्तक्षेप करेंगे।

बूता = बल

"उसीके अनुसार बिना किसी अंतर के हम रकम देते रहे। तब उस में भी परिवर्तन हुआ। इस राज्य में एक रेसिडन्ट रहे, कंपनी की सेना की तीन पंक्तियाँ कोलम् में अड्डा जमायें, सर्प को दूध देने के समान इन्हें रहने के लिए घर बना दें और प्रतिदिन उनके अत्याचारों को सहते रहें—ये सब करने के हम बाध्य हुए। फिर सन् ९८० के पौष मास में वे हमें तंग करने लगे कि दो लाख रुपया ज़्यादा देना चाहिए, वरना वे आक्रमण करेंगे। चारों ओर उन्होंने तोपों की कतार लगा दी और शत्रुता का प्रदर्शन किया। तब असहयोग होकर अपने दुर्दैव का फल समझकर हम दो लाख रुपया अधिक देने लगे।

"आज दशा और भी बिगड़ी है। उनका प्रस्ताव है कि इस राज्य की सेना का विघटन करके, ईश्वर-सेवा, साधु-भोजन आदि बंद कर, खर्च कम करके, वह धन भी उन्हें दिया जाय और राजकाज की सारी बातें रेसिडेन्ट मेकाले के मनोनुकूल की जायँ। इसकी असंभाव्यता हमने बतायी, धरती तक झुककर प्रणाम किया, तथापि सहमत न होकर पिछले मार्गशीर्ष मास में हमें एक पत्र उन्होंने भेजा। उसमें निर्देश दिया गया है कि मैं अगर यह नौकरी छोडकर कंपनी के राज्य में जाकर बस जाऊँ तो मुझे काफी वेतन तथा पुरस्कार दिये

जायेंगे और उसके बाद कर्नल मेकाले राजकाज सँभालेगा ; वरना एक युद्ध का श्रीगणेश हो जायगा ।

"ऐसा ही एक पत्र महाराजा को भी भेजा गया । लेकिन महाराज ने यह कहकर उसे टाल दिया कि राज्यद्रोह के कार्यों में वे सहायक न रहेंगे । तब महाराज की अनुज्ञा के बिना रेसिडेन्ट मेकाले ने समुद्रमार्ग से कुछ सैनिकों को कोलम में लाकर बसाया है और अपनी महिलाओं को अन्य देश भेजा है । अब तक उनसे युद्ध करने का मंतव्य इस राज्य को नहीं था । लेकिन अभी स्वयं रक्षा के लिए कुछ विधान न करें तो भविष्य में इसके भयंकर फलों को हम झेल नहीं सकेंगे ।

"इसका कारण यह है कि छल-कपट से राज्य प्राप्त करना उनकी परंपरागत रीति है । अगर हमारा राज्य इस तरह उनके हाथ लग जायगा तो वे महल, राजवंश, देवालयों के पूजाविधान, रस्म और जनता के प्रतिनिधियों की सभाएँ नष्ट कर देंगे; नमक से लेकर सभी वस्तुओं पर लगान वसूल करेंगे; ऊसर खेतों को भी नापकर कर लगाएँगे; छोटे अपराधों के लिए भी कडे से कडे दण्ड देंगे; मंदिरों में झंडा और टिकठी लगाएँगे; जाति भेद के बिना ब्राह्मण नारी

आदियों से संग करेंगे एवं युग के अनुरूप अधर्म्मों का विधान करने में ज़रा नहीं हिचकेंगे।

"इस राज्य में उपर्युक्त कुछ भी अधर्म्म संभव न हो और मर्य्यादा का उल्लंघन न हो। कोई हमारी हँसी न उड़ाये कि इसे रोकने के लिए मानवीय प्रयत्नों में हमने कुछ उठा रखा है। हम परिश्रम करें और पश्चात् जो कुछ आये उसे ईश्वर का निश्चय समझकर सहन करें।"

कठिन शब्दों का अर्थ

अखाडा	= वह स्थान जहाँ लोग व्यायाम करते और कुश्ती लडते हैं ।
अमल में लाना	= प्रयोग करना; कार्यान्वित करना
अरमान	= इच्छा
अवाक्	= स्तंभित, चकित
आग बबूला होना	= गुस्सा होना
आतंक छा जाना	= भय छा जाना, प्रताप फैलना
आमदनी	= आय
इनाम	= पुरस्कार
कलई खुल जाना	= रहस्य खुल जाना
कान भरना	= किसी के विरुद्ध कोई बात मन में बिठा देना
कील	= Nail
गला घोंटना	= अंत कर देना
घमासान	= घनघोर
चारा	= उपाय
चाल चलाना	= उपाय करना; छल करना
चुटकियों में	= जल्दी में

जंग = Rust

छक्का छूटना = धैर्य नष्ट होना

जत्था = झुंड, दल

जायदाद = संपत्ति

जालिम = अत्याचारी

झुलसना = गरमी से सूख जाना

डेरा डालना = अस्थायी रूप से निवास करना

तंबाकू = Tobacco

तलवा चाटना = बहुत खुशामद करना

तितर बितर हो जाना = छिन्न-भिन्न होना

दम तोडना = मरते समय अंतिम साँस लेना

दुर्दैव = दुर्भाग्य

दौरा करना = यात्रा करना

नारा लगाना = किसी विशेष सिद्धांत या पक्ष का घोष करना

नीलाम = चीज़ें बेचने का वह ढंग जिसमें अधिक बोलनेवाले को माल बेचा जाता है।

पता चलना = मालूम होना ; समाचार मिलना

फूले अंग न समाना = बहुत प्रसन्न होना

बही = हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक

बाज़ार गरम होना = (किसी वस्तु की) अधिकता होना
बोटी बोटी काटना = शरीर को टुकडे टुकडे कर देना
मन मसोसना = मन दुखी होना
माथा-पच्ची करना = अधिक सोचविचार करना
मालगुज़ारी = Tax
मुँह की खाना = अपमानित या लज्जित होना
मुठभेड़ = भिडंत; टक्कर
यदा-कदा = कभी कभी
लोहा मानना = पराजित होना
विघटन = Dissolution
श्रीगणेश = आरंभ
सरसरी = जल्दी में; मोटे तौर पर
सहकारिता = Co-operation
सीना = छाती
सौ बात की एक बात = सारांश
स्फूर्ति = तेज़ी, उत्साह
स्वर्ग सिधारना = मर जाना
हवाले करना = किसीकी अधीनता में दे देना
हामी भरना = सहमत होना
हुलिया = आकृति, रूप
हेर-फेर = उलट-पलट

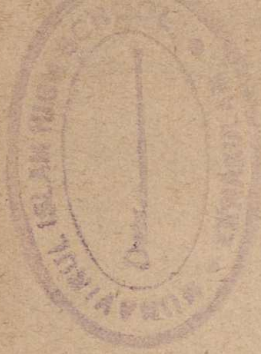

MOHAN PUBLICATIONS
(HINDI)

Standard VIII

1. Dhanush Yagna
2. Sri Narayana Guru
3. Shatru Tadha Mitra
4. Phool Aur Taare
5. Viphal Prem

Standard IX

1. Radio
2. Gouri Shankar
3. Eesa Maseeh
4. Shamadan
5. Bachom Ka Bharat

30/12

Standard X

1. Ek Doure Ki Kahani
2. Kavivar Ravindranath
3. Shakuntala
4. Vyomayan Ki Katha
5. Sadik

Standard XI

1. Veluthampi
2. Shivaji
3. Sanskriti Ka Ithihas
4. Nala Chritham
5. Do Kahaniyam

APPLY TO

K. PRABHAKARAN NAIR

KAVUVILA HOUSE

JEGATHY, TRIVANDRUM-1.

Cover Printed at the Jayaram Press, Trivandrum.

3012

वेलूरांपि

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ
(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

ISLAM HIGH SCHOOL · ERNAKULAM
Date
955

MOHAN PUBLICATIONS.
राष्ट्र भाषा साहित्य समिति
स्टाद्यू रोड त्रिवेन्ड्रम-१

Standard XI **Book No. 1**